भारत सरकार
अंतरिक्ष विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या : 1433

बुधवार, 31 जुलाई, 2024 को उत्तर देने के लिए

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी स्टार्ट-अप को सहायता

1433. सुश्री एस. जोतिमणि:

क्या **प्रधानमंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) इस समय में भारत में अंतरिक्ष-तकनीकी सेवाओं से संबंधित निजी स्टार्ट-अप की संख्या का विवरण क्या है;

(ख) क्या अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी की उन्नति के लिए सार्वजनिक निजी भागीदारी (पीपीपी) का कोई प्रस्ताव है;

(ग) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके कारण क्या हैं;

(घ) क्या किसी अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी स्टार्ट-अप ने अपने संचालन और उद्यमों के लिए इसरो से संपर्क किया है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ङ) क्या केंद्र सरकार के पास ऐसे स्टार्ट-अप को और समर्थन दिए जाने के लिए नीति विकसित करने की कोई ठोस योजना है?

उत्तर
कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय
तथा प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री
(डॉ. जितेन्द्र सिंह) :

(क) इस समय अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी श्रेणी के अंतर्गत कुल 229 अंतरिक्ष स्टार्ट-अप्स पंजीकृत हैं, जो कि वर्ष 2014 में केवल 01 (एक) था।

(ख) एवं (ग)

जी हां, अंतरिक्ष आयोग ने अपनी 152वीं बैठक में सार्वजनिक निजी भागीदारी (पीपीपी) मॉडल के अंतर्गत गैर-सरकारी कंपनियों द्वारा भू-प्रेक्षण (ईओ) उपग्रह समूहों के निर्माण की रूपरेखा को अनुमोदन प्रदान किया है। एनसिल ने पीपीपी मॉडल में प्रमोचन यान उत्पादन के लिए एक प्रस्ताव जारी किया है।

(घ) अंतरिक्ष क्षेत्र के सुधारों के बाद से भारतीय अंतरिक्ष क्षेत्र में स्टार्ट-अप्स और निजी कंपनियों की संख्या में तेजी से वृद्धि दिखाई दे रही है। इसरो भारत में एक उत्साहजनक अंतरिक्ष परितंत्र को सुगम बनाने के लिए इन-स्पेस के माध्यम से तकनीकी सहायता, अपनी

...2/-

विशेषज्ञता तथा सुविधा के उपयोग को साझा करता है। मैसर्स अग्निकुल कॉस्मॉस नामक एक भारतीय स्टार्ट-अप द्वारा हाल ही में संपन्न एक उपकक्षीय मिशन 'अग्निबाण सोरटेड' में उपलब्ध कराई गई सहायता, भारतीय अंतरिक्ष क्षेत्र में निजी स्टार्ट-अप्स को सहायता तथा संपोषण उपलब्ध कराने की संगठन की इच्छा को प्रदर्शित करती है। इसी प्रकार, इसरो से प्राप्त प्रचुर तकनीकी सहायता से गत वर्ष मैसर्स स्काईरूट एयरोस्पेस ने अपनी प्रथम उप-कक्षीय उड़ान ('विक्रम-एस') का सफलतापूर्वक प्रमोचन किया। इसके अलावा, प्रमोचन यान निर्माण, उपग्रह विकास, अंतरिक्ष अनुप्रयोग तथा भू-प्रणालियों में संलग्न अनेक अंतरिक्ष स्टार्ट-अप्स को इसरो तकनीकी सहायता उपलब्ध कराता रहा है।

(ङ) जी हां, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रवेश करने तथा भारतीय अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में योगदान देने हेतु बड़ी संख्या में उद्यमियों को प्रोत्साहित करने के लिए निम्नलिखित प्रमुख उपाय किये गए हैं :

- अंतरिक्ष क्षेत्र का उदारीकरण किया गया है और निजी क्षेत्र को आद्योपांत अंतरिक्ष कार्यकलाप आयोजित करने की अनुमति प्रदान की गई है।
- अंतरिक्ष क्षेत्र में गैर-सरकारी कंपनियों (एनजीई) के कार्यकलापों को प्रोत्साहित करने, प्राधिकृत करने तथा उनकी देख-रेख करने हेतु अंतरिक्ष विभाग में भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्धन और प्राधिकरण केंद्र (इन-स्पेस) का गठन किया गया।
- एक समृद्ध अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था का सृजन करने हेतु विविध हितधारकों द्वारा अंतरिक्ष कार्यकलापों को विनियामक निश्चितता प्रदान करने के लिए सरकरा द्वारा भारतीय अंतरिक्ष नीति- 2023 तैयार की गई है।
- भारतीय गैर-सरकारी कंपनियों की विदेशी पूंजी तक पहुंच को आसान बनाने हेतु इन-स्पेस ने अंतरिक्ष विभाग के साथ मिलकर अंतरिक्ष क्षेत्र के लिए संशोधित प्रत्यक्ष विदेशी निवेश नीति तैयार की है।
- इन-स्पेस ने "इन-स्पेस उद्यमिता पूर्व प्रोद्भवन (पीआईई) विकास कार्यक्रम" की संकल्पना तैयार की है और उसको प्रारंभ किया है। यह कार्यक्रम विचार को न केवल प्रारूप में परिवर्तित करने में सहायता करेगा, अपितु उद्यमियों तथा उससे जुड़े व्यावसायिक कौशलों के विकास में भी मदद करेगा।
- निजी क्षेत्र को प्रोत्साहित करने तथा उन्हें ठोस सहायता प्रदान करने के लिए इन-स्पेस द्वारा बीज निधि योजना, मूल्य निर्धारण सहायता नीति, मेंटरशिप सहायता, एनजीई के लिए डिजाइन प्रयोगशाला, अंतरिक्ष क्षेत्र में कौशल विकास, इसरो सुविधा उपयोग सहायता, एनजीई को प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, अंतरिक्ष परितंत्र के सभी हितधारकों को जोड़ने हेतु इन-स्पेस डिजिटल प्लेटफॉर्म का सृजन आदि जैसी योजनाएं घोषित और क्रियान्वित की गई।

- भारतीय अंतरिक्ष अर्थ-व्यवस्था के लिए इन-स्पेस द्वारा एक दशकीय दृष्टि और रणनीति की भी घोषणा की गई है, जिससे समग्र अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में भारत की हिस्सेदारी बढ़ेगी।
- इन-स्पेस विविध व्यापार और निवेश संबंधी अवसरों के लिए अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष संगठनों तथा कंपनियों के साथ सहयोग एवं साझेदारी हेतु अंतरराष्ट्रीय बाह्य-संपर्क कार्यकलापों को आयोजित करता रहा है।
- इन-स्पेस संचार सेवाओं के लिए लागत प्रभावी भू-प्रणाली का स्थानीय विनिर्माण प्रारंभ करने हेतु भारतीय उद्योग को प्रोत्साहित कर रहा है।
- इन-स्पेस अंतरिक्ष प्रणाली उत्पादों और अवयवों के लिए समर्पित आद्योपांत विनिर्माता समूहों की स्थापना हेतु राज्य सरकारों को प्रोत्साहित करता रहा है।

***